श्लोक नं० 5

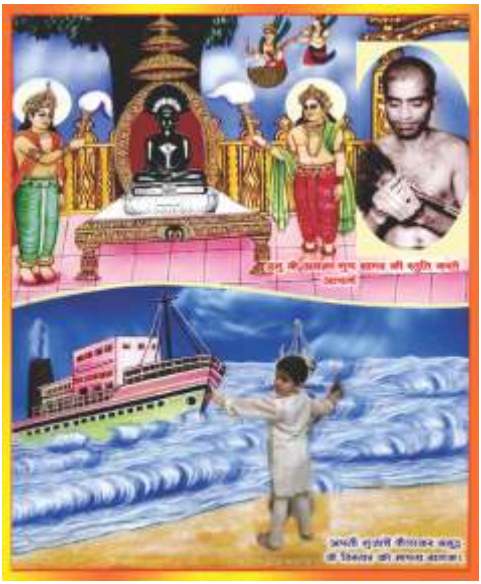

अतुल उत्साह

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि
कर्तुंस्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः॥ 5॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

अनगिन गुण की खान आपकी स्तुति को मैं तैयार।
लेकिन शब्दों में गुण वर्णन करने को लाचार॥
स्वल्प बुद्धि अनुसार बाल सागर विस्तार कहे।
दोनों नन्हें कर फैलाकर इतना बड़ा कहे॥
बाल भक्त मैं नाथ तिहारा स्तुति की अभिलाषा।
मैं नादान मात्र पहचानूँ श्रद्धा की भाषा॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 5॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहिजिणाणं।

अनन्तावधिलब्ध्यर्द्धीन्, जिनांस्तत्त्वविशारदान्।
यजेऽहं परया भक्त्या,नत्वा तद्गुणसिद्धये॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

सखी छन्द

1. अरहन्त अवस्था पायी, अनुपम अचिन्त्य अतिशायी।
जय पार्श्वनाथ ध्रुवधामी, मैं वन्दूँ त्रिभुवननामी॥ 225॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. अभ्युदय कब हो मेरा, मिट जाए जग का फेरा।
अतएव शरण में आया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥ 226॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. उद्यमी मोक्ष पुरुषार्थी, होता निश्चित परमार्थी।
वह आत्म लक्ष्य को पाता, कहती जिनवाणी माता॥ 227॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तोरणद्वारे बँधवाए, जब विहार कर प्रभु आए।
घर-घर में खुशियाँ छाईं, गाते हैं सभी बधाई॥ 228॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. अस्मिन् शुभ भारत देशे, तीर्थेश हुए प्रभु जैसे।
मैं अभी यहीं से वन्दूँ, जिनवर महिमा अभिनन्दूँ॥ 229॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्मि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तट पाऊँ भवसागर का, मिल जाय पता निज घर का।
उद्देश्य यही भक्ति का, दर्शन पाऊँ मुक्ती का॥ 230॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वस्त्राभूषण सब त्यागे, सारे विकार तब भागे।
सब विश्व चराचर जाना, शुद्धात्म तत्त्व पहचाना॥ 231॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नागेन्द्र शरण में आया, पारस प्रभु का गुण गाया।
प्रभु हो अनन्त उपकारी, दिखलाते पथ हितकारी॥ 232॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. थक-थक कर क्यों सोता है, क्यों पाप बीज बोता है।
समझाती माँ जिनवाणी, सब तज विकल्प हे प्राणी॥ 233॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. जञ्जीर बँधी कर्मन की, है चाह प्रभो दर्शन की।
पाता हूँ अद्भुत शान्ति, तव-मूरत की लख कान्ति॥ 234॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. डाले कर्मों ने डेरे, मिट जाए कब भव फेरे।
अनगिन भविजन को तारा, दो मुझको नाथ सहारा॥ 235॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. शक्ति अनन्त प्रकटा ली, भक्तों की विपदा टाली।
अमरत्व आपने पाया, जन्मादि मेटने आया॥ 236॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. योगीजन ध्यान लगाते, एकाकी हो प्रभु ध्याते।
जिन से निज में रम जाते, सिद्धालय में बस जाते॥ 237॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शुद्धोऽपि मैं दुख पाता, भव-दुख अब सहा न जाता।
हूँ शुद्ध स्वयं निश्चय से, दुख पाता व्यवहारिक से॥ 238॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कर्त्ता पर का बन करके, भोगे संकट मर-मर के।
अब आप कृपा से जाना, निज का कर्त्ता पहचाना॥ 239॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्बी तैरे ज्यों जल में, हो लेप नहीं जब उसमें।
कर्मों का लेप छुड़ा दो, प्रभु निज सम मुझे बना दो॥ 240॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. स्तव करना मुझे न आता, सुनकर ही मैं सुख पाता।
जो करें स्तवन बड़भागी, बन जाए मुक्ति-मार्गी॥ 241॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वंदित हैं तीन भुवन से, मन से वचनों से तन से।
निज सम भक्तों को करते, तव महिमा ना गा सकते॥ 242॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. लग गयी लगन दर्शन की, साक्षात् प्रभु अर्चन की।
कब होगी इच्छा पूरी, मिट जाएगी कब दूरी॥ 243॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ल' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सरवर देखा सपने में, प्रभु की माता वामा ने।
हुई रत्न-वृष्टि आँगन में, हर्षित है धनपति मन में॥ 244॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर्पण धुँधला हो जाता, प्रभु दर्पण इक-सा रहता।
अब और नहीं कुछ देखूँ, प्रभु की छवि को अवलोकूँ॥ 245॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. संबंध तजूँ मैं 'पर' का, पथ पाऊँ मोक्षनगर का।
हैं स्वजन सिद्धप्रभु मेरे, यहाँ स्वारथ के हैं मेले॥ 246॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. हूँ असंख्य आत्मप्रदेशी, फिर भी भटकूँ भववासी।
निज महिमा जान न पाया, अतएव जगत भरमाया॥ 247॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ख्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गुरु से प्रभु महिमा जानी, निज आतम निधि पहचानी।
प्रभु महिमा लिखी ना जाए, सुरगुरु भी थक-थक जाए॥ 248॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वीणा मुरली बजते हैं, जग को सूचित करते हैं।
जागो-जागो भवि प्राणी, आ रहे पार्श्व जिननामी॥ 249॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कलशा भर-भर कर लाए, मेरु पर न्हवन कराए।
सुर ऐरावत गज लाए, उस पर प्रभु को बैठाए॥ 250॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रस का विकल्प जब ना हो, फिर विकल्प में रस क्यों हो।
प्रभु निर्विकल्प गुणधारी, मैं नमन करूँ शत बारी॥ 251॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. हास्यादिक कषाय नाशी, हो गए सिद्धपुर वासी।
हे मुक्तिनगर के राजा, मम सिद्ध करो सब काजा॥ 252॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बालक प्रभु तुम्हें पुकारे, तुम ही प्रभु एक सहारे।
यह डूब रही मम नैया, तुम ही हो नाथ खिवैया॥ 253॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लोभी याचक बन आता, जड़ धन ही माँगा करता।
प्रभु से मैं कुछ ना मांगूँ, बस वीतरागता चाहूँ॥ 254॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दासोऽपि दर पर आया, शुभ अर्घ्य चढ़ाने लाया।
दर्शन से दास तिरेगा, शिवपथ पर शीघ्र बढ़ेगा॥ 255॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. किं[1]-किं मुझको करना है, प्रभु तुमको बतलाना है।
जिस राह चले हो प्रभुवर, चलना है उसी डगर पर॥ 256॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'किम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. क्या

33. नवजीवन अब पाना है, मैंने मन में ठाना है।
मुझे विनम्र होकर रहना, शाश्वत सिद्धालय बसना॥ 257॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. निज अनुभूति से जाना, निज में सु-ज्ञान खजाना।
फिर प्रभु ने निजनिधि पायी, अनुभवते सुख अतिशायी॥ 258॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. जलते अहि युगल बचाए, उनको सन्मार्ग दिखाए।
मैं हूँ प्रभु भक्त तिहारा, दिखला दो नाथ किनारा॥ 259॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. बान्धव कुछ काम न आते, सब स्वारथ के हैं नाते।
जिसमें न कभी हो धोखा, वह रिश्ता प्रभु से जोड़ा॥ 260॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हुण्डावसर्पिणी आया, पर रत्नत्रय को पाया।
तीर्थङ्कर पदवी पाई, जय पार्श्वनाथ जिनराई॥ 261॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. युगपत् चर-अचर झलकते, पर राग-द्वेष ना करते।
प्रभु वीतराग गुणधारी, जय हो जय-जय त्रिपुरारि॥ 262॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गम्भीर आपकी वाणी, सब जन-जन की कल्याणी।
नर जीवन सफल करूँ मैं, तव पथ पर नित्य चलूँ मैं॥ 263॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गं' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विनती इक मेरी सुनिए, भव-भव की बाधा हरिए।
तुम ही प्रभु धर्म सु-नेता, मम मेटो कर्म असाता॥ 264॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तत्पर जो प्रभु भक्ति में, वह जाए शीघ्र मुक्ति में।
मुझको प्रभु नाम सुमरना, करना है सम्यक् मरणा॥ 265॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तत्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यति भी तव गुण गाते हैं, भक्ति में रम जाते हैं।
सम्यक् प्रयत्न मैं कर लूँ, प्रभु को अन्तर में धर लूँ॥ 266॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. विस्मय आदिक ना होता, प्रभु तत्त्वों के प्रस्तोता।
प्रभु महिमा कैसे गाऊँ, मैं अल्प बुद्धि शर्माऊँ॥ 267॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'विस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तीर्थेश आप कहलाते, भवदधि का तीर दिखाते।
प्रभु तुमने अनगिन तारे, मुझको भी नाथ उबारें॥ 268॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तीर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. प्रण दृढ़ता से मैं करता, तव पद बिन कहीं न नमता।
मिथ्यात्व तजूँ मैं सारा, पाऊँ समकित उजियारा॥ 269॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ण' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जगतां प्रभु दुरित हरे हैं, मनवाञ्छित पूर्ण करे हैं।
मैं शरणागत हूँ स्वामी, मम कष्ट हरो जगनामी॥ 270॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ताम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. कर जोड़ करूँ मैं वन्दन, पारस जिन का अभिनन्दन।
वन्दन से बन्धन तोडूँ, झूठे रिश्ते सब छोडूँ॥ 271॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. थल जल नभ में घूमा हूँ, भव-भव का मैं दुखिया हूँ।
कहीं तनिक मिली ना साता, जिन द्वार मुझे मन भाता॥ 272॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यश उनका दस दिश फैला, जब घोर परीषह झेला।
उपसर्ग विजेता स्वामी, करूँ अर्चन हे सुखधामी॥ 273॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तिमिरान्तक आप कहाते, मिथ्यातम को विनशाते।
मैं करूँ आरती स्वामी, बन जाऊँ केवलज्ञानी॥ 274॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्वर्गों से सुर आते हैं, थाली भर-भर लाते हैं।
सब वाद्य बजाकर पूजे, प्रभु के जयकारे गूँजे॥ 275॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. धिक्-धिक् संसार असारा, यामे है दुःख अपारा।
फिर भी रखते सुख आशा, पर लगती हाथ निराशा॥ 276॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भक्ति शय्यां प्रभु आओ, बालक को शीघ्र जगाओ।
तन मन में प्रभु जी तुम हो, चेतन में प्रभु जी तुम हो॥ 277॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'याम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. बुधजन श्रद्धा जल लाते, प्रभु का अभिषेक कराते।
आठों ही याम सुमरना, प्रभु भक्ति कर शिव वरना॥ 278॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. राजा महाराजा आए, जन-पुरजन पूज रचाए।
भक्ति से मिलती शक्ति, भक्तों को होती तृप्ति॥ 279॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणराशेः जिन भण्डारी, प्रभु तीन भुवन हितकारी।
जीवों के प्राण बचाए, भव्यों को धीर बँधाए॥ 280॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शेः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

गुण वर्णन की लाचारी, फिर भी स्तुति की तैयारी।
मैं बाल भक्त दर आया, शुभ अर्घ्य चढ़ाने लाया॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्लोक नं० 6

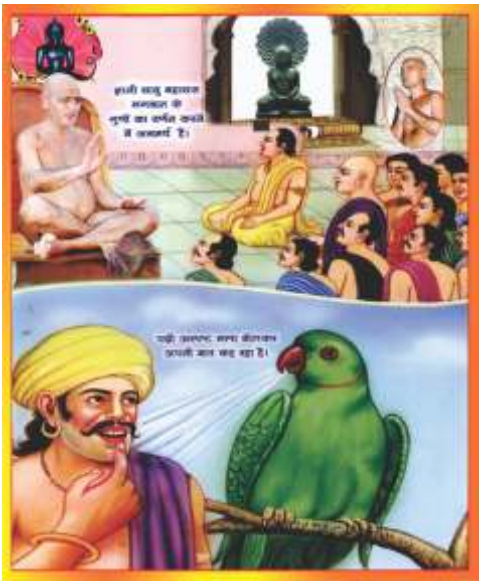

अल्प बुद्धि से स्तुति

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि॥ 6॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

बड़े-बड़े योगी भी जब प्रभु गुण ना गा सकते।
मुझ जैसे अज्ञानी फिर कैसे गुण गा सकते॥
पंछी बिना विचारे जैसे बोला करता है।
भक्त पखेरु भक्तिवश गुण गाया करता है॥
अतिशय पुण्योदय से प्रभु भक्ति का भाग्य जगा।
लगा मुझे मम श्रद्धा नभ में सूरज आज उगा॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 6॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं ।

कोष्ठबुद्धीनृषीन् विश्व, शास्त्रविस्तृतमानसान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 6॥

ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

दोहा

1. **ध्येय बनाकर आपने, वर ली मुक्तिनार।**
बतला दो सिद्धि-डगर, हे मुक्ती करतार॥ 281॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ये' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **योगीजन के गम्य हो, अज्ञ न जाने कोय।**
जिन-गुण नन्त अगम्य हैं, गुण गणना ना होय॥ 282॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **गिरि शिखर से आप जिन, सिद्धिवल्लभा पाय।**
पार्श्वनाम का जाप ही, शिव का पथ दिखलाय॥ 283॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **नाम मात्र के स्मरण से, मिटे कोटि अपराध।**
यही अरज है आपसे, पल-पल देना साथ॥ 284॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **महलादिक वैभव तजा, पहुँचे वन जिनराय।**
सर्व परिग्रह त्याग कर, निज में स्वयं समाय॥ 285॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **पिता पितामह आप ही, हो सर्वस्व जिनेश।**
अतः करूँ आराधना, हे पारस परमेश॥ 286॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **नरकादि दुख भोग कर, आया जिनवर द्वार।**
मुझे मिला दो स्वयं से, कर दो यह उपकार॥ 287॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. याददाश्त कमजोर है, भूलूँ हर एक बात।
भले भूल जाऊँ जगत, तुम्हें न भूलूँ नाथ॥ 288॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. नमन्ति भविजन नित्य ही, मन वच काय लगाय।
यदपि आप कृतकृत्य हो, तदपि मार्ग दिखलाय॥ 289॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न्ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. गुप्ति गुफा में बैठकर, हुए सुरक्षित आप।
भक्त ढूँढ़ते रह गए, पहुँचे शिवपुर नाथ॥ 290॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. णाणं णेय प्रमाण है, कहते यह जिनदेव।
पूर्णज्ञान से व्याप्त जिन, पूजे भक्त सदैव॥ 291॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अस्त गगन का सूर्य हो, जिनरवि उदित हमेश।
अनन्त गुणमय तारिका, टिम-टिम करे विशेष॥ 292॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वेगवान रथ ध्यान का, बैठे उस पर नाथ।
पहुँचे अन्तर्मुहूर्त में, सिद्धालय में आप॥ 293॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शक्र[1] करे तव अर्चना, दिव्य द्रव्य ले थाल।
जिन-भक्ति में लीन वह, नवा रहा है भाल॥ 294॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. वक्ता श्रेष्ठ जिनेश हैं, श्रोता मुनि गणीश[2]।
तीन गति के जीव सब, नमन करें धर शीश॥ 295॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वक्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्हीं मेरे साध्य हो, साधन आप विशेष।
तुम बिन शिवपथ ना सधे, कारज करें अनेक॥ 296॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तुम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. इन्द्र 2. गणधर

17. कमठासुर भी हार कर, शरण गही जिनराय।
समवसरण में आ गया, प्रभु-पद शीश झुकाय॥ 297॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थंबे में यदि मूर्ति हो, मानस्तम्भ कहाय।
दर्श मात्र से भव्य का, सर्व मान गल जाय॥ 298॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भवनत्रिक सुरगण सभी, आए प्रभु समीप।
नाच-नाच कर पूजते, जलते श्रद्धा दीप॥ 299॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वधुएँ जग की सब वरी, वरी ना सिद्धिनार।
विषयों में रमकर प्रभो, पाया दुःख अपार॥ 300॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तिरे आप भव-सिन्धु से, अनन्त शक्तीमान।
मुझको दो हस्तावलम्ब, पाऊँ सिद्धि थान॥ 301॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेजोमय लख तव छवि, भाग गए सब कर्म।
निजावलोकन मात्र से, पाया है शिव शर्म॥ 302॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सत्त्वेषु मम भाव हो, सर्व जीव हो मीत।
रहे दुखी जन पर कृपा, जिनवच से हो प्रीत॥ 303॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'षु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. महामन्त्र में आप हो, पार्श्वप्रभो निष्पाप।
करूँ प्रभु के नाम का, प्रातः उठकर जाप॥ 304॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मार्ग कठिन है मोक्ष का, चलते केवल भव्य।
अभव्य जीव न पा सके, कहें वचन प्रभु दिव्य ॥ 305॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वन्दन कर त्रय योग से, हो जाते हैं वन्द्य।
श्रद्धा से जो पूजते, हो जाते हैं पूज्य॥ 306॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. काम भोग औ बन्ध की, कथा सुनी कई बार।
सुनूँ निजातम की कथा, हो जाऊँ भव पार॥ 307॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्रिदश:[1] आकर चरण में, बार-बार सिर नाय।
बड़भागी निज को कहें, जब प्रभु के गुण गाय॥ 308॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'श:' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. जागो-जागो कह रहे, दुन्दुभि नाद बजाय।
ऊँचे स्वर से गा रहे, सुरगण अति हर्षाय॥ 309॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ताली भक्त बजा रहे, जब प्रभु करें विहार।
खड़े सभी नर-नारियाँ, पंक्तीबद्ध कतार॥ 310॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तरङ्ग भक्ति की उठी, भक्त आ गया द्वार।
और नहीं कुछ कामना, निरखूँ बारम्बार॥ 311॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. देह नेह करके प्रभु, भटक रहा संसार।
विदेह पद को पा सकूँ, करिए प्रभु उपकार॥ 312॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. देव

33. वन जैसा संसार है, सुख की कहीं न छाँव।
भटका हूँ अब तक बहुत, मिला नहीं विश्राम॥ 313॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन्दिर-मन्दिर ढूँढ़ता, मिले कहीं न आप।
खोजा जब निज आत्म में, दिखे मुझे जिननाथ॥ 314॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सहस्र नयनों से तुम्हें, निरख रहा सुरराज।
स्वर्ग लोक फीका दिखे, जिनवर सम्मुख आज॥ 315॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मीठी वाणी बोलिए, कहते आर्ष पुराण।
वचनों से व्यक्तित्व का, हो जाता है भान॥ 316॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मी' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. क्षितिज के उस पार भी, जाने देखे आप।
हुए आप सर्वज्ञ जिन, मिटा सकल सन्ताप॥ 317॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तरह-तरह के वेष धर, धरी नन्त पर्याय।
लक्ष्य यही अब पा सकूँ, शुद्ध सिद्ध पर्याय॥ 318॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. कारण हो शिव कार्य के, साधन आप जिनाय।
वीतराग जिनदेव ही, भव का भ्रमण मिटाय॥ 319॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'का' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिमझिम-रिमझिम बरसती, जिन-ऊर्जा चउ ओर।
समवसरण में रात ना, रहती है नित भोर॥ 320॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तेरह विध चारित्र धर, किया त्रिविध विधि नाश।
यही अरज है भक्त की, करिए मम उर वास॥ 321॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. अयं-वयं कहता रहा, जाना नहीं निजात्म।
निपुण रहा व्यवहार में, जाना ना परमार्थ॥ 322॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यम्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. जल्दी आतम हित करो, समय बीतता जाय।
इक-इक पल अनमोल है, कहते हैं जिनराज॥ 323॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जल्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. पन्थ मुक्ति का एक है, समकित ज्ञान चरित्र।
चलो अकेले मार्ग में, बनो स्वयं के मित्र॥ 324॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिहुँ-लोक तिहुँकाल में, वीतराग ही सार।
राग-द्वेष मय दुख भरा, जिनवाणी उर धार॥ 325॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वामानन्दन को करें, नमन सकल संसार।
डूबे हुए सु-भक्त को, तुम ही तारणहार॥ 326॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. निधत्ति निकाचित कर्म का, चाहो यदि विनाश।
दर्श करो जिनबिम्ब का, धर उर श्रद्धा खास॥ 327॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जडधी पूर्णमति बने, हो प्रभु पर विश्वास।
जो करना जल्दी करो, कल की कुछ ना आश॥ 328॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गिर-गिरकर उठता रहा, गिरा उठा कई बार।
सिद्धालय तक उठ सकूँ, शक्ती दो जिनराज॥ 329॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. राग भाव ही दुःख का, मूल हेतु है जान।
वीतराग निज रूप को, प्रभु कहें पहचान॥ 330॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नयन ढूँढ़ते आपको, पर ना दिखते आप।
चाह आपके दर्श की, और ना कोई चाह॥ 331॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नुत-नुत करूँ प्रणाम मैं, प्रणम्य हो प्रभु आप।
पूजन करके आपकी, होय भव्य निष्पाप॥ 332॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. परिभाषाएँ याद की, परिणति की न सुधार।
बिन सुधरे परिणाम तो, कैसे हो उद्धार॥ 333॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. क्षिप्र[1] करो कम समय है, कब मिट जाए देह।
आतम हित अब साध लो, कहते हैं जिनदेव॥ 334॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्षि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. समणो सम सुह दुःख में, शत्रु मित्र में साम्य।
समता धर प्रभु पार्श्व ने, पाया शिवपुर धाम॥ 335॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. सोऽपि यह भी स्वप्नवत्, पलभर में मिट जाय।
शाश्वत कुछ ना जगत में, निजातमा थिर पाय॥ 336॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

बड़े-बड़े योगी थके, मैं अबोध असमर्थ।
गा न सकूँ गुण पंछी मैं, अतः चढ़ाऊँ अर्घ्य॥6॥

ॐ ह्रीं श्रीं अगम्यगुणाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं...।

1. शीघ्र

श्लोक नं॰ 7

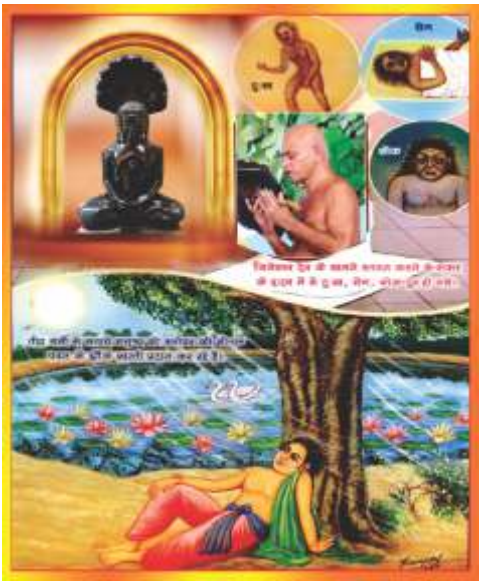

प्रभु नाम लेने का फल

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन! संस्तवस्ते
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत पान्थ जनान्निदाघे
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि॥ 7॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज – कहाँ गए चक्री...)

अचिन्त्य महिमावन्त स्तवन का कोई न पावे पार।
नाथ आपके नाम मात्र की महिमा अपरम्पार॥
ग्रीष्म ऋतु में सूर्य ताप से पीड़ित मानव को।
कमल सरोवर की पुर्वैया सुख देती उनको॥
ज्ञान सरोवर नाथ आपका नाम स्मरण सुखकार।
कर्म ताप से पीड़ित जन को कर देता भव पार॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 7॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं।

बीजबुद्धीन् मुनीन् बीजा, क्षराज्जाताखिलागमान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अडिल्ल छन्द

1. आस्था और आनन्द का सम्बन्ध है।
श्रद्धालु ही पाता परमानन्द है॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥337॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'आस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तारक हो प्रभु नन्त भव्य के आप ही।
दिव्य दृष्टि से मिटे जगत सन्ताप ही॥ यही०॥ 338॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ता' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मणि रत्नों को पद में देव चढ़ा रहे।
श्रेष्ठ प्रभु को पूज सर्व हर्षा रहे॥ यही०॥ 339॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. चिन्तामणि तो चिन्तित फल ही देता है।
प्रभु चिन्मय चिन्तामणि अचिन्त्य देता है॥ यही०॥ 340॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चिन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. नित्य आपकी करूँ अर्चना सुखदायी।
नाशो विषय विकार वेदना दुखदायी॥ यही०॥ 341॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मलिन मन से जाप करे तो होगा क्या।
मन शुद्धि बिन बाह्य शुद्धि से होगा क्या॥ यही०॥ 342॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. हितमित प्रिय प्रभु-वाणी मन को मोहती।
समवसरण में सभा द्वादशी शोभती॥ यही०॥ 343॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मानव होकर भी मैंने अब क्या किया।
परद्रव्यों में जीवन व्यर्थ गँवा दिया॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 344॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जिनआगम में इक-इक अक्षर मोती है।
पूर्णज्ञान की भरी इसी में ज्योति है॥ यही०॥ 345॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नत मस्तक हूँ नाथ आपके चरण में।
लक्ष्य यही है नाशूँ भव का भ्रमण मैं॥ यही०॥ 346॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. संस्कारों का बिगुल बजाया आपने।
पतितों को पावन बनाया आपने॥ यही०॥ 347॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'संस्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. तन्त्रादिक कुछ काम नहीं आ पाते हैं।
दुख में कोई रिश्ते काम ना आते हैं॥ यही०॥ 348॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वर्द्धन होता विकल्प से संसार का।
आगम कहता अशुभ भाव अब टालना॥ यही०॥ 349॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रस्ते-रस्ते जिनमन्दिर ना दिखते हैं।
दुर्लभता से वीतराग प्रभु मिलते हैं॥ यही०॥ 350॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नाऽहं बालो वृद्धोऽहं मैं आत्म हूँ।
शुद्ध निश्चयाश्रित मैं भी परमात्म हूँ॥ यही०॥ 351॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ना' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. माणिक मोती लाकर प्रभु को पूजते।
सुर-नरेन्द्र सब अपना भाग्य सँवारते॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 352॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पिला रहे प्रभु ज्ञानामृत का पेय ही।
पाना है अब मुझको मुक्ती ध्येय ही॥ यही०॥ 353॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पारिजात मन्दार नमेरु बरस रहे।
पुष्पवृष्टि कर सुरगण भी हर्षा रहे॥ यही०॥ 354॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तिनका डूबते को एक सहारा है।
प्रभु-भक्ति से भव का मिले किनारा है॥ यही०॥ 355॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भव-अटवी में भटकता हूँ मैं स्वामी।
मुक्ति-महल का मार्ग दिखाओ शिवधामी॥ यही०॥ 356॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वतन आपका सिद्धालय अति शुद्ध है।
सिद्धों में कर्मागम ही अवरुद्ध है॥ यही०॥ 357॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तोयं[1] चन्दन आदिक लेकर आ गया।
प्रभु का दिव्य भामण्डल मन भा रहा॥ यही०॥ 358॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भर-भर कर भण्डार आखिर क्या होना।
खाली हाथ आया खाली ही जाना॥ यही०॥ 359॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जल

24. वसुधा सारी कुटुम्ब जैसी मानते।
निज सम सारे जीवों को गुरु जानते॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 360॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोड़ दिए नाते पल में जग के सभी।
चले गए गिरि-शिखर ना आएँगे कभी॥ यही०॥ 361॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. जन्म जरादिक दोष अठारह नाश कर।
तीर्थङ्कर हो गए पार्श्व जिन क्षेमकर॥ यही०॥ 362॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. गन्दा मन है तन को मल-मल धो रहा।
चेतन की पावनता को क्यों खो रहा॥ यही०॥ 363॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'गन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरना है भव मोह मगर से जो भरा।
तारो मुझको नाथ भक्त मैं हूँ खरा॥ यही०॥ 364॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तीर पहुँचे भवदधि के हे पार्श्व जिन।
करें भक्त गुणगान आपका रात-दिन॥ यही०॥ 365॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ती' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तीव्रानल भी शान्त होता सुमरन से।
मिटे कर्म सन्ताप प्रभु की पूजन से॥ यही०॥ 366॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व्रा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तरस रहा है भक्त आपके दर्शन को।
दिखला दो प्रत्यक्ष छवि आराधक को॥ यही०॥ 367॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पोषक भव्य जन के भवदधि तारक हो।
अतुल्य बल के धारक शिवसुख कारक हो॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 368॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. परमामृत नित पीकर आनन्दित रहे।
अव्याबाध सुख का झरना नित्य बहे॥ यही०॥ 369॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. हम हमारे की दुनिया मेरी छोटी।
भक्त और भगवान की इसमें जोड़ी॥ यही०॥ 370॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ह' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तथ्य नहीं कुछ भी असार संसार में।
सारभूत जिन नाम हमें भव तारने॥ यही०॥ 371॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पांडुक शिला शोभती प्रभु प्रभाव से।
न्हवन हेतु सुर लाए प्रभु को भाव से॥ यही०॥ 372॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पां' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. थके नयन प्रभु बाट जोहते आपकी।
कब आओगे सूनी वेदी ज्ञान की॥ यही०॥ 373॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जय-जय उच्चारण की ध्वनियाँ हो रहीं।
समवसरण में पूजा सुरियाँ कर रहीं॥ यही०॥ 374॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जिनान् गुण को वन्दूँ नित-प्रति भाव से।
है विश्वास तिरूँगा भक्ति नाव से॥ यही०॥ 375॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नान्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. निशङ्क होकर प्रभु वचनों को धार लूँ।
अगले भव में मुनि बनकर भव तार लूँ॥ यही०॥ 376॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दाता तुम-सा वीतराग ना जगत में।
पाऊँ रत्नत्रय का दान नाथ मैं॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 377॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'दा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. घेरा है कर्मों ने चारों ओर से।
नाथ बचा लो भक्त खड़ा कर जोड़ के॥ यही०॥ 378॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'घे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रीत आपसे जिसने भी कर ली सदा।
मुक्त हुआ कर्मों से हो न दुखी कदा॥ यही०॥ 379॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प्री' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. णाणावरणादिक कर्मों का क्षय किया।
क्योंकि आपने सब विकार पर जय किया॥ यही०॥ 380॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णा बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिमिर नाशकर लोक अग्र पर जा बसे।
द्रव्य भाव नोकर्म आपके सब नशे॥ यही०॥ 381॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. पर्व मनाये मुकुट सप्तमी हम सभी।
मुक्त दिवस प्रभु श्रावण शुक्ला सप्तमी॥ यही०॥ 382॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'प' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. छद्म दशा को नाश केवली हो गए।
पार्श्वप्रभु निज में केलि कर खो गए॥ यही०॥ 383॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. सहस्रदल कमलासन पर बैठे अधर।
चार दिश में दिखते हैं पारस जिनवर॥ यही०॥ 384॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रणनीति में महाकुशल हैं पार्श्व प्रभो।
नि:शस्त्र ही चउ अघातिया नाशे विभो॥ यही०॥ 385॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सः[1]-सः कहते काल नन्ता बीत गया।
यह मैं हूँ आतम पर ध्यान ना दिया॥
यही अरज हम भव्यों का कल्याण हो।
पार्श्वप्रभु सारे भक्तों के प्राण हो॥ 386॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित उपकारी है।
प्रभु कहते रत्नत्रय ही सुखकारी है॥ यही०॥ 387॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहकर जग में आत्म में जो रमते हैं।
प्रभु भक्त मुनि निजात्म का रस चखते हैं॥ यही०॥ 388॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'र' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. सोऽहं-सोऽहं रटने से कुछ ना हुआ।
शान्त चित्त हो ध्याने से निज को छुआ॥ यही०॥ 389॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'सो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. निष्ठुर जन निष्ठा से रहते दूर हैं।
सम्यक्त्वी जन आस्था से भरपूर है॥ यही०॥ 390॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोभ पाप का बाप कहा जिनदेव ने।
निष्कषाय बन पा जाऊँ तव शरण मैं॥ यही०॥ 391॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'लो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भवान्तरेऽपि जिनशासन मुझको मिले।
चउ आराधन की कलियाँ मुझमें खिले॥ यही०॥ 392॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

नाम मात्र की महिमा अपरम्पार है।
प्रभु स्तवन महिमा का कोई न पार है॥
रहे सरोवर दूर हवा ही सौख्य दे।
श्रद्धा का शुभ अर्घ्य पाप को मेट दे॥ 7॥

ॐ ह्रीं श्रीं स्तवनार्हाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

1. वह

श्लोक नं० 8

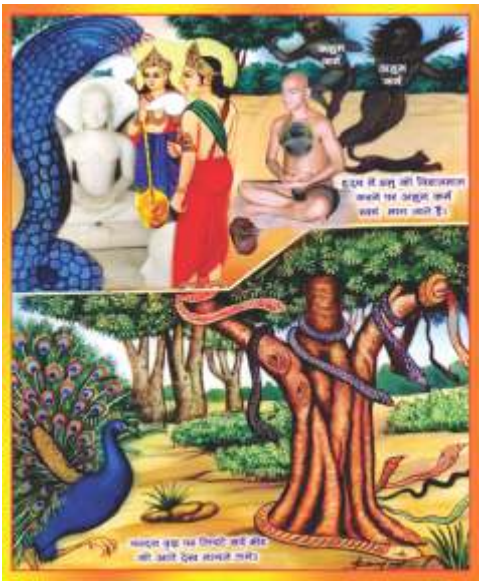

कर्मबन्ध की शिथिलता

हृद्-वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य॥ 8॥

विष्णुपद छन्द (तर्ज - कहाँ गए चक्री...)

भक्त हृदय में वामानन्दन प्रभु जब बस जाते।
कर्म बन्ध सारे पलभर में ढीले पड़ जाते॥
ज्यों चन्दन तरुवर पर लम्बे विषधर लिपटे हों।
वन मयूर के आते ही सब ढीले पड़ते हों॥
मेरे ज्ञान वृक्ष पर मोह भुजङ्गम लिपट रहा।
नाच उठा भक्ति मयूर अब बन्धन टूट रहा॥
पार्श्वनाथ कल्याणधाम की महिमा गाता हूँ।
संकटहारी प्रभु चरणों में शीश नवाता हूँ॥ 8॥

(ऋद्धि) ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं।

पादानुसारिप्राप्तर्द्धीन्, ज्ञातसर्वपदान् पदान्।
यजेऽहं परया भक्त्या, नत्वा तद्गुणसिद्धये॥ 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्यावली

अर्द्ध ज्ञानोदय छन्द

1. **हृद्यः मनहर रूप देखकर, कर्म बन्ध ढीले पड़ते।**
ज्यों मयूर आते चन्दन तरु, लिपटे साँप भाग जाते॥ 393॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'हृद्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. **वर्णन कौन करे वर्णों से, तव गुण गिनने योग्य नहीं।**
नाथ आपकी अनन्त महिमा, मात्र जानने योग्य रही॥ 394॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. **तिलाञ्जली देकर विभाव की, स्वभाव में प्रभु लीन हुए।**
निर्विकार हो गए प्रभु जी, सब विकार ही क्षीण हुए॥ 395॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. **निश्चय औ व्यवहार नयों को, जैनागम में बतलाया।**
जिनने लक्ष्य किया निश्चय का, उनने शुद्धातम पाया॥ 396॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. **त्वमेव ज्ञानी त्वमेव ध्यानी, नाथ आप मुक्तिगामी।**
सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर की, लगे वन्दना अभिरामी॥ 397॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'त्व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. **सामायिक में साधक गण जब, ध्यान आपका ध्याते हैं।**
भले आप सिद्धालय में प्रभु, किन्तु स्वयं में पाते हैं॥ 398॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'यि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. **विद्यासागर पूर्ण भरा है, नन्त ज्ञान गुण मोती से।**
पार्श्वप्रभु की पूजन से मैं, सुख पाऊँ प्रभु ज्योति से॥ 399॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भोग भोगकर ऊब गया हूँ, कब तक इन्हें भोगना है।
भोग छोड़कर योग लीन हो, निज से मुझे जोड़ना है॥ 400॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. शिवाङ्गना का वरण किया पर, मोह रहित पारस स्वामी।
कैसी यह अद्भुत पहेली, जान सकूँ ना जगनामी॥ 401॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. थिरक-थिरक कर नृत्य गान कर, पूजन कर सुर हर्षाए।
ऊर्ध्व लोक से मध्यलोक आ, वीतराग छवि लख पाए॥ 402॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'थि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लीला जड़ कर्मों की सारी, ज्ञानी आकर्षित ना हो।
पुण्य-पाप के सुख-दुख फल में, मन उसका विचलित ना हो॥403॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ली' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. भवनवासी ज्योतिष व्यन्तर औ, वैमानिक सुरगण आते।
निज परिवार सहित भावों से, अर्चन करके सुख पाते॥ 404॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. वन्दन ऐसा करूँ प्रभु मैं, भव-भव के बन्धन क्षय हो।
शक्ति दो मैं बहुत थक चुका, अब दूरी शिव की तय हो॥ 405॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'वन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. तिजोरियाँ भरकर अज्ञानी, खाली हाथ चला जाता।
दान पुण्य कुछ कर ले प्राणी, ऐसा जैनागम गाता॥ 406॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ति' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. जन्म-मरण करते-करते मैं, बहुत थक चुका हूँ स्वामी।
यद्यपि मैं अजरामर हूँ पर, दुःख भोगता जगनामी॥ 407॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'जन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. जन्तोः[1] सुख के कर्त्ता स्वामी, सर्व दुखों के हारक हो।
महिमा सुन आया चरणों में, आप ही विघ्न निवारक हो॥ 408॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'तोः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

1. जीवों को

17. क्षय कर काम शत्रु को स्वामी, शीलेश्वर पद प्राप्त किया।
तीन भुवन में पूजनीय प्रभु, सर्वश्रेष्ठ पद आप्त लिया॥ 409॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'क्ष' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गुणेन पूजे जाते हैं नर, तन धन से ना पूज्य बने।
अनन्त गुण प्रकटाए प्रभु ने, दोष सर्व ही पूर्ण हने॥ 410॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'णे' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नन्दन वन-सा लगता है जब, आप शरण में आ जाते।
तन मन चेतन की पीड़ाएँ, भूल आपमें खो जाते॥ 411॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. निष्फल है यह नरभव सारा, यदि मोक्षफल नहीं चखा।
मनुज देह सब व्यर्थ गई यदि, मोक्षमहल पग नहीं रखा॥ 412॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. बिना आपके पथ दिखलाए, अशक्य है प्रभु चल पाना।
अतः करूँ मैं अरज आपसे, पथदर्शक मेरे रहना॥ 413॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. डाल-डाल औ पत्ते-पत्ते, प्रभु विहार में झूम रहे।
प्रभु तन स्पर्शित पवन परस पा, भक्त सभी हम नृत्य करें॥ 414॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. अनन्त काल बिताये मैंने, बिना आपके हे स्वामी।
आप मिले तो शीघ्र यति बन, हो जाऊँ मुक्तीगामी॥ 415॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'अ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिछली रात्रि में माता ने, देखे सोलह स्वप्न महान।
फल सुनकर हर्षित जग सारा, जन्म धरेंगे श्री भगवान॥ 416॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'पि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कर्मोदय में विज्ञात्मा जन, हर्ष-विषाद नहीं करते।
सुमेरु सम दृढ़ पार्श्वप्रभु के, श्री चरणों में हम नमते॥ 417॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'कर्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मन मर्कट है यह अति चंचल, कैसे इसको थिर कर लूँ।
मन्त्र बता दो इसका भगवन्, आप बताये पथ चल दूँ॥ 418॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बन्धु मित्र पुरजन परिजन सब, स्वारथ के ही साथी हैं।
पल दो पल सुख के संगी है, दुख में सब ही स्वार्थी हैं॥ 419॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'बन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. सुधाः पेय सम वचन आपके, जो श्रद्धा से पीते हैं।
सिद्ध शुद्ध अक्षय पद पाकर, अजर-अमर हो जीते हैं॥ 420॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'धाः' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. समदर्शी सर्वज्ञ प्रभु जी, न्यायमूर्ति ही लगते हैं।
भेदज्ञान कर जड़ चेतन का, शिव-मारग दर्शाते हैं॥ 421॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. विद्योदय कब हो जीवन में, यही प्रतीक्षा करता हूँ।
पार्श्वप्रभु की पूजन करके, प्रभु चरणों में नमता हूँ॥ 422॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द्यो' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. भुक्ति युक्ति औ शक्ति व्यर्थ है, भक्ति नहीं यदि जीवन में।
सम्यक् श्रद्धा ज्ञान चरित से, नन्त सौख्य हो चेतन में॥ 423॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भु' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जब-जब पाप उदय आवे तो, णमोकार का जप करना।
निमित्त पर ना दोष लगाना, निर्मल भाव सदा रखना॥ 424॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ज' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. निसङ्ग होकर एक अकेले, धर्मयुद्ध में डटे रहे।
हुए न जब तक अष्ट कर्म क्षय, प्रभु ध्यान में लीन रहे॥ 425॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ङ्ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मणि मुक्ता प्रभु चरण चढ़ाकर,मन में शान्ति मिलती है।
रत्नदीप से आरति करके, अन्तर ज्योति जलती है॥ 426॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मद-पद दो ये जुड़वा भाई, नीतिकार यह कहते हैं।
विरला है वह पदवीधर जो, मान रहित ही रहते हैं॥ 427॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. यात्रा पथ में मदमाते गज, शिखर वनी में भ्रमण करें।
इसी गिरि पर आकर मुनिवर, शुद्धातम में रमण करें॥ 428॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. इधर-उधर उपयोग भटकता, लक्ष्य यही निज लीन रहूँ।
पार्श्वप्रभु की भक्ति करके, विभाव परिणति क्षीण करूँ॥ 429॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'इ' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. वक्षस्थल पर प्रभु के अंकित, दिखता है श्रीवत्स महा।
नन्त चतुष्टय गुण के धारी, दुर्लभ जिन का दर्श रहा॥ 430॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मध्यलोक से लोक अग्र पर, पार्श्वनाथ जी पहुँच गए।
भक्त देखते रहे एकटक, सिद्धालय प्रभु चले गए॥ 431॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'मध्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. यतिपति भी शुद्धोपयोग तज, प्रभु के गुण का ध्यान करें।
शुभोपयोगी होकर मुनिजन, जिनवचनों का ज्ञान करें॥ 432॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाव शून्य हो क्रिया करे तो, निश्चित निष्फल हो जाती।
भाव सहित हो अल्प क्रिया भी, विशेष फल को दिलवाती॥ 433॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भा' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गर्हा निन्दा करे स्वयं की, धर्म्यध्यान यह कहलाता।
किन्तु करे पर की निन्दा तो, पाप कमाता दुख पाता॥ 434॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मनपर्यय ज्ञानी होकर भी, किञ्चित् मान नहीं करते।
सहज विशुद्ध भावना द्वारा, सिद्धिवल्लभा को वरते॥ 435॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'म' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. श्रुताभ्यास करते-करते यूँ, वर्ष बिताये कई यहाँ।
ढाई अक्षर आत्म तत्त्व का, जान नहीं पाए तो क्या॥ 436॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'भ्या' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. गगन चूमता शिखर उच्च है, दुग्ध धवल सम मन्दिर हैं।
टोंक-टोंक के दर्शन करके, भाव हो रहे उज्ज्वल हैं॥ 437॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ग' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तेईसवें तीर्थङ्कर प्रभु श्री, पार्श्वनाथ की जय होवे।
सर्व प्रियङ्कर विघ्नहरण की, पूजन वसु विधि मल धोवे॥ 438॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'ते' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वशीभूत पंचेन्द्रिय मन के, होकर पाप कमाया है।
हाथ न आया कुछ भी भगवन्, चंचल मन भरमाया है॥ 439॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'व' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नन्हा-सा मैं भक्त तिहारा, कुमुदचन्द्र सम भक्ति नहीं।
हूँ अबोध अति अज्ञ प्रभु जी, स्तुति करने की शक्ति नहीं॥ 440॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शिव-आलय में आप बसे हो, कैसे नाथ पुकारूँ मैं।
इन पैरों में शक्ति नहीं है, कैसे भगवन् आऊँ मैं॥ 441॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'शि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. खण्ड-खण्ड कर मोह कर्म को, जड़ से नाश किया स्वामी।
कहलाए निजनाथ प्रभु जी, जय हो जय पारस नामी॥ 442॥
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'खण्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. दंडित करते कर्म उसे ही, जो हँस-हँस कर बाँध रहे।
उदय समय पर रोते-रोते, कर्म फलों को भोग रहे॥ 443॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'डि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. निगोद में रहकर प्रभु मैंने, नन्त काल दुख भोग लिया।
दुर्लभता से मनुज बना अब, जिनशासन को प्राप्त किया॥ 444॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'नि' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. चन्दन चन्द किरण गङ्गा जल, से भी शीतल प्रभु वाणी।
भवाताप को पल में हरती, भव्यों की संशय हरणी॥ 445॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'चन्' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दहन किया है राग-द्वेष का, ध्यान अनल प्रकटा करके।
राग आग की दाह मिटे मम, आया अरजी लेकर के॥ 446॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'द' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नग्न दिगम्बर वेष मुक्ती का, एक उपकरण माना है।
चिन्मय अव्याबाध देश का, चिह्न यही पहचाना है॥ 447॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'न' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रहस्य प्रभुवर की प्रकृति का, जान नहीं मैं पाता हूँ।
हूँ अल्पज्ञ एकटक भगवन्, मात्र देखता रहता हूँ॥ 448॥

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त 'स्य' बीजाक्षर-संयुक्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

प्रभु प्रभाव से भविजन मनहर, स्तव प्रारम्भ किया स्वामी।
अनन्त गुण मुक्ता पाने को, अर्घ्य चढ़ाऊँ शिवधामी॥8॥

ॐ ह्रीं श्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं-महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।